467वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | द्वादश अंक | जुलाई 2017

इस अंक में...

11 व्यक्ति की सोच ही उसे बनाती है
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
20 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
27 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
39 नवीनतम सामान्य ज्ञान
45 खेलकूद
49 मुम्बई इण्डियंस तीसरी बार आईपीएल-X की विजेता
52 रोजगार समाचार
54 युवा प्रतिभाएं
61 स्मरणीय तथ्य
64 विधि निर्णय
66 विश्व परिदृश्य
72 फोकस—भारत में काला धन : अर्थव्यवस्था की जड़ों को खोखला करता रोग
75 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
78 आर्थिक लेख—वस्तु एवं सेवा कर : एक राष्ट्र-एक बाजार-एक कर
82 संवैधानिक लेख (i) संघीय कार्यपालिका : राष्ट्रपति
85 (ii) पंचायती राजव्यवस्था के सशक्तिकरण के प्रयास
88 द्विपक्षीय सम्बन्ध—भारत-यूएई दोस्ती का व्यापक फलक
91 भौगोलिक लेख—भारत के प्रमुख डेल्टा क्षेत्र
93 सामयिक लेख—प्रवासी भारतीय दिवस समारोह का आयोजन एवं इसकी असाधारण उपयोगिता
96 विज्ञान लेख—मानव-मस्तिष्क की विलक्षणता एवं कृत्रिम मस्तिष्क का विकास
98 पर्यावरण लेख—ग्लोबल वार्मिंग एवं जीवन-शैली
100 पर्यावरण लेख—नदियों के नागरिक अधिकार
101 सार संग्रह
105 सामान्य अध्ययन—मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग राज्य सेवा (मुख्य) परीक्षा, 2016
112 सामान्य अध्ययन—(i) आगामी सिविल सर्विसेज (प्रारम्भिक) परीक्षा, 2017 हेतु विशेष हल प्रश्न
122 (ii) झारखण्ड लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा, 2016
127 (iii) उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (प्रा.) परीक्षा, 2016-17
138 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
140 समसामयिक बहुविकल्पीय प्रश्न
142 ऐच्छिक विषय—(i) शिक्षा—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
147 (ii) समाजशास्त्र—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016

विविध/सामान्य

153 महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन 2016-17
155 मध्यकालिक ऐतिहासिक शब्दावली
157 संक्षिप्त अद्यतन जानकारी
158 तर्कशक्ति—यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेन्स कं. लिमिटेड (ए.ओ.) परीक्षा, 2016
163 संख्यात्मक अभियोग्यता—आईबीपीएस आर. आर. बी. पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2016
168 क्या आप जानते हैं ?
169 अपना ज्ञान बढ़ाइए
170 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा— राजनीतिक ध्रुवीकरण: चुनाव जीतने का अचूक यंत्र
172 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—जनजागरण में सोशल मीडिया का महत्व
174 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-456 का परिणाम
175 English—RBI Officer Grade 'B' Exam., 2016

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

व्यक्ति की सोच ही उसे बनाती है

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

श्रेष्ठता जन्म से नहीं मिलती यह व्यक्ति की सोच और कर्मों का प्रतिफल है.

As you think you become.

'जैसा सोचोगे वैसा बनोगे.' यह एक ध्रुव सत्य है. साथ ही यह एक ऐसा तथ्य (Fact) है जो अनेक भ्रमणाओं (illusions) को भी दूर करता है.

अक्सर लोग कहते हैं कि 'हम जो हैं वह ऊपर वाले की मर्जी से हैं.' वो जैसा चाहेगा वैसा होगा, जैसा रखेगा वैसे रहेंगे. किन्तु उपर्युक्त तथ्य कहता है कि वह ऊपर वाला हकीकत में कोई आसमां में बैठा परमात्मा या परवरदीगार नहीं है बल्कि वह हम सबके भीतर मौजूद हमारी अपनी ही भावशक्ति, इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति व कर्मशक्ति है, जो हमें प्रतिपल रचती है. आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी का यह प्रसिद्ध वाक्य है कि—

क्या आप जानते हैं कि आपकी सृष्टि के रचयिता कौन हैं ? —'आप स्वयं'

आप ही अपनी सोच से खुद को बनाते हैं. अगर आपने यह लेख पढ़ना चाहा तो ही आप पढ़ेंगे, आप न चाहें तो नहीं. आज आप जिस क्लास में, जिस विषय को पढ़ रहे हैं, यह आपका अपना चुनाव है. आप अपनी सोच के जिम्मेदार स्वयं ही हैं. इस तथ्य को जान लिए जाने पर एक बात और उभर कर आती है कि—क्या कभी आइंस्टीन ने सोचा था कि वो इस सदी का महान् वैज्ञानिक बनेगा ? क्या कभी राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, कबीर, तुलसी, मीरा, दादू और भी न जाने कितने युगपुरुष व महापुरुष हो गए, क्या वे यह सोच रखते थे कि वे महापुरुष बनें ?

सम्भव है आप कहें कि यदि सोचने से ही हम महान्, धनवान, गुणवान, बुद्धिमान व विद्वान् बन जाते हों तब तो हमें कुछ करने की जरूरत ही नहीं, हम मात्र सोचते रहें और एक दिन खुद बन जाएंगे. तर्क-वितर्क कितने भी किए जा सकते हैं, किन्तु तथ्य तर्कों के पार हैं. तर्कातीत सत्य 'तथ्य ज्ञान' कहलाता है. आप जो सोच रहे हैं अगर उसमें निःशंक जिज्ञासा है तब तो उत्तर खुद-ब-खुद ध्वनित हो ही जाएगा कि यदि बिना किसी सोच या विशेषताओं को धारण किए एक बालक महान् वैज्ञानिक, दार्शनिक या महात्मा बन सकता है, फिर तो कोई भी कुछ भी बन सकता होगा. किन्तु ऐसा नहीं है, कई बार हम अपनी सोच के प्रति सजग समान नहीं होते, किन्तु वह 'कर्म-बीज' सभी क्रियाओं और उपलब्धियों का मूल कारण हमारा 'विचार' ही होता है, जो हमारे भविष्य की रचना करता है, हमारा भविष्य हमारे उन सोच-विचारों की देन है, जो चेतन अथवा अवचेतन रूप से हमारे भीतर सत्ता जमाए बैठे हैं. हमारा मन बर्फ के उस थैले की तरह है जो 98% प्रतिशत पानी में छुपा रहता है मात्र 2% ही दिखलाई पड़ता है. हमारा चेतन मन, जो इस समय व क्षेत्र के प्रभावों को ग्रहण करता है, वह तो सम्पूर्ण मन का 2% ही हिस्सा होगा, शेष सभी सोच अवचेतन या अचेतन मन में समाहित है, जो लोग पिछली शती या इस शती में महान् प्रसिद्ध हुए हैं, वे हों अथवा जो लोग अभी तक कुछ न कर पाए, कुछ उपलब्धियाँ हासिल न कर पाए, बार-बार असफलताओं का सामना कर रहे हैं. वे सभी लोग अपने ही विचारों का प्रतिफल प्राप्त कर रहे हैं. हम जो भी बनते हैं, उसमें मुख्यतया हमारी सोच की ही भूमिका रहती है.